आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां | अंक : बारहवां | अप्रैल-2013

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

4
झूठे छड के विहार
(एक शब्द)

5
नाम की कीमत
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

34
धन्य अजायब
(सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
फोन – 0 99 50 55 66 71 व 0 98 71 50 19 99

उपसम्पादक : माया रानी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया 099 28 92 53 04

सहयोग : परमजीत सिंह

प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल 2013 – 133 – मूल्य – पाँच रुपये

झूठे छड के विहार

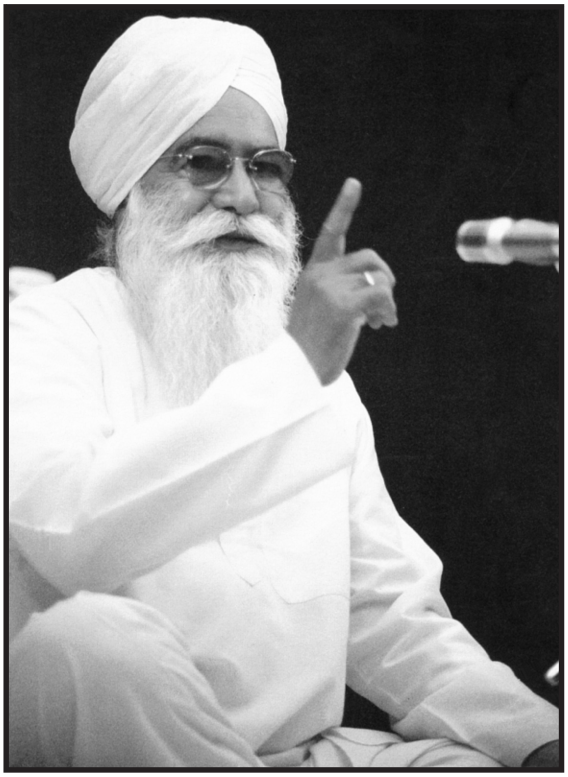

झूठे छड के विहार, करीं गुरां नाल प्यार,
सच्ची श्रद्धा नूं धार, प्यार गुरां नाल पा लवीं,

होमैं हंगता नूं मार, वैर ईरखा विसार,
मिल जाऐ निरंकार, चित्त चरणा च ला लवीं,

घड़ी नाम ना विसार, तेरा हो जाऐ उद्धार,
बेड़ा लग जाऐ पार, पहलां मन समझा लवीं,

'अजायब' मिले कृपाल, हो जाऐ जे दयाल,
कर देवे मालोमाल, मन बदियां तों ठा लवीं,

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम की कीमत

स्वामी जी महाराज की बानी | 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

भादों मास तीसरा जारी। दौं लागी सब जग को भारी।

यह बानी हुजूर स्वामी जी महाराज की है। भादों के महीने में मलेरिया का जोर होता है अगर भादों के महीने में बुखार हो जाए तो बहुत प्यास लगती है। दो महीने बहुत भड़की के हैं चाहे कोई कितना भी पानी पी ले प्यास नहीं बुझती। उत्तर प्रदेश में साल आषाढ़ के महीने से शुरू होता है। पंजाब में साल चेत्र महीने से शुरू होता है। आषाढ़, सावन, भादों तीसरा महीना है।

स्वामी जी महाराज भादों के महीने का महात्म बता रहे हैं। आपने हर महीने को मनुष्य जन्म के साथ तसवीह देकर बताया है कि **नाम की कीमत** क्या है? सन्तों के बिना 'नाम' नहीं मिलता। नाम के बिना मुक्ति नहीं चाहे आप जप-तप, पूजा-पाठ, दान-पुण्य और मूर्ति-पूजा कितनी भी श्रद्धा प्यार से करें लेकिन मुक्ति नहीं होती। आप जिस चीज़ की पूजा करेंगे उसका रूप हो जाएंगे। पत्थर को पूजेंगे तो पत्थर बन जाएंगे, बंदर को पूजेंगे तो बंदर बन जाएंगे, गाय-भैंस को पूजेंगे तो गाय-भैंस के जामें में आ जाएंगे।

जहाँ आसा तहाँ वासा।

स्वामी जी महाराज इस महीने के बारे में बहुत कुछ बताएंगे कि मुक्ति नाम में है। बाकी हम जो भी कर्म करते हैं उनमें मुक्ति नहीं। हमारे अंदर क्या कमियां हैं और हम क्या करते हैं?

आज तक हिन्दु मुसलमानों में जितने भी सन्त-महात्मा आए सबनें अपनी-अपनी बोली में सुरत शब्द योग को ही लिया है।

हिन्दुओं में उन मंजिलों के नाम संस्कृत में हैं और मुसलमानों में उन मंजिलों के नाम अरबी में है। मंजिलें और भगवान वही है सबका साधन और तरीका एक ही है।

सारे सन्त यही समझाते हैं कि परमात्मा हमारे अंदर है। आज तक परमात्मा बाहर से न किसी को मिला है और न मिल ही सकता है। अगर हमारी वस्तु इस जगह खो गई हैं, हम बाहर जाकर कितनी भी श्रद्धा और प्यार से तलाश करें चाहे दो-चार आदमियों को मदद के लिए भी बुला लें लेकिन हम कामयाब नहीं हो सकते। हमने वस्तु को वहाँ ढूंढना है, जहाँ वह वस्तु खो गई है। कबीर साहब कहते हैंः

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं, कह विधि आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाईये, भेदी लईऐ साथ।

सबसे पहले उस भेदी से मिलें जिसने जिंदगी में यह मसला हल किया हो। सन्त-महात्मा किसी को अंधविश्वास नहीं देते उनका मतलब तो इतना ही है कि परमात्मा रीति-रिवाज और लम्बी-चौड़ी प्रार्थनाएं करने से नहीं मिलता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बिन बोलयां सब कुछ जांणदा किस पे करिए अरदास।

किसके आगे अरदास करें! वह तो हमारे अंदर बैठा है, हमारी हर हरकत को देख रहा है। हमने ठंडे दिल से सतसंग को विचारना है कि महात्मा हमें क्या समझाते हैं, हमारे अंदर क्या कमी है?

तीन ताप का बड़ा पसारा। इक इक जीव घेर कर मारा।

आप प्यार से कहते हैं, ''हर किसी को तीन ताप(बुखार) चढ़े हुए हैं। हम कहते हैं कि हम तंदरूस्त हैं। महात्मा तीन किस्म के ताप - रूहानी, जिस्मानी और असमानी का जिक्र करते हैं। आपका

तन दो-चार दिन तंदरूस्त है पता नहीं किस समय बीमारी आ जाए, बुढ़ापा आना तन का रोग है। आत्मा रोगी होने के कारण ही परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकती।''

किसी प्रेमी ने महाराज सावन सिंह जी से सवाल किया, ''क्या रूह को भी ताप चढ़ता है?'' आपने कहा, ''रूह को ताप चढ़ा हुआ है इसलिए यह परमात्मा की तरफ नहीं लग रही अगर यह तंदरूस्त हो तो यह भी तंदरूस्त इंसान की तरह काम करे।'' लोहे का रंग काला है लेकिन आग में डालने से इसका रंग लाल हो जाता है। बेशक लोहा जलता नहीं लेकिन आग का रूप हो जाता है; इसके अंदर भी जलाने वाले गुण पैदा हो जाते हैं।

इसी तरह हमारी आत्मा तन में रहती है बेशक आत्मा जन्मती-मरती नहीं अमर है इसे काल फनाह नहीं कर सकता लेकिन यह रोगी पिंजरे के अंदर दुःख भोग रही है। आत्मा कभी पशु तो कभी पक्षी के पिंजरे में है। जब इंसान के जामें में आते हैं बेशक हम कह देते हैं कि हम तंदरूस्त हैं लेकिन किसी को कर्ज लेने तो किसी को कर्ज देने का दुःख है। किसी का बच्चा मर गया है वह रोता फिरता है। किसी का बच्चा नहीं है या नालायक निकल जाए तो वह रोता फिरता है। औरत विधवा हो जाती है रोती फिरती है। पत्नी मर जाती है तो पति दिन-रात उबासियां लेता फिरता है ये रोग नहीं तो और क्या है?

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जिन्हें पैदा होते ही तीन ताप चढ़े हुए हैं आप उनकी क्या दवाई करेंगे? जब तक हमारी आत्मा नाम के साथ नहीं जुड़ती इसका रोग दूर नहीं होता।'' आप आगे बताएंगे कि इसे और किस किस्म की भड़की लगी हुई है?

काम क्रोध मद लोभ सतावें। माया ममता आग लगावें।

आप कहते हैं कि इसे काम की भड़की लगी हुई है। काम की भड़की के कारण ही इंसान जानवरों वाले काम करता है। काम हमेशा बेइज्जती का कारण बनता है। इसांन इस जहर को खाने से बाज नहीं आता। क्रोध के पीछे लगकर एक कौम दूसरी कौम को तबाह करने पर तुली हुई है। जो कौम दूसरी कौम को तबाह करने पर तुली है क्या ये कौम उसके साथ जाएगी?

आज तक इस संसार में बड़ी-बड़ी कौमें आई लेकिन यह दुनिया न किसी के साथ गई है न जा ही सकती है? इसी तरह लोभ में आकर इंसान अपना पराया हक नहीं देखता। लोभी किसी भी वक्त धोखा दे सकता है। गुरु नानकदेव जी महाराज हमें लोभी आदमी से खबरदार करते हुए कहते हैंः

लोभी का वसाह न कीजे, जे का पार वसाओ।
अंत काल तित्थे धोए, जित्थे हत्थ न पाए।

लोभी की संगत से दूर रहें पता नहीं लोभी ने आपको कब धोखा दे देना है, लोभी आदमी कुछ भी कर सकता है; उसने तो अपना लोभ पूरा करना है।

आप प्यार से कहते हैं, ''काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की भड़की लगी हुई है। हम भटकने में ही दिन-रात तड़प रहे हैं दुखी हो रहे हैं लेकिन फिर भी हम इस तरफ नहीं आ रहे कि परमात्मा की भक्ति करें, इस भड़की का इलाज करें।''

जल जल जीव पड़े घबरावें। छूटन की कोइ जुगत न पावें।

आप कहते हैं, ''जीव जलते हैं रोते पुकारते हैं लेकिन फिर भी छूटने वाली तरफ नहीं आते। जिन लोगों ने इंसानी जामें में गलतियां की होती हैं, परमात्मा की भक्ति नहीं की होती वे आज

गाय, भेड़, बकरी, मुर्गी बनकर गला कटवा रहे हैं। हो सकता है! किसी समय ये हमसे अच्छे इंसान हों लेकिन इंसानी जामें में अत्याचार करके, परमात्मा की भक्ति न करने के कारण ऐसी योनियों में जाकर दुख भोगते हैं।''

मुसलमानों की पवित्र किताब में लिखा है कि जब इंसान ऊँची योनियों में गलतियां करता है तो उसे निचली योनियों में सजा मिलती है। आप जिसका गला काटते हैं वह आपका गला जरूर काटेगा। आज हम जिसके जिस्म में मसाले लगाकर खाते हैं वह भी किसी वक्त हमारे जिस्म में मसाले लगाकर खाएगा। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

लिए दिए बिन रहे न कोए।

हम सोचते हैं कि गाय, भैंस, भेड़, बकरियां हमारी खुराक के लिए बनाई गई हैं। जितना एक इंसान को इस धरती पर जीने का हक है उतना पशु-पक्षी को भी है। वही आत्मा मच्छर में भी है और इंसान में भी है। आप अपने जिस्म को काटकर देखें! आपको दर्द होगा हम जिसके गले पर छुरियां चला रहे हैं उसे भी दर्द होगा।

महात्मा प्यार से कहते हैं कि हम अपनी आँखो से तड़पते, रोते और चिल्लाते हुओं को भी देखते हैं फिर भी हमारा मन इस तरफ नहीं आता। हम 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो कम से कम इन सजाओं से बच जाएं।

कोई कर्म कोई धर्म सम्हारे। कोइ विद्या कोइ जप तप धारे।

कोई किसी जगह शुभ कर्म करने में मुक्ति समझता है कोई किसी जगह जाकर धर्म करने को अच्छा समझता है। मैं आपको कई बार लाला जी की बात बताया करता हूँ कि इनकी बैलगाड़ी के

अचानक आगे झुकने से बैल का गला दब गया और बैल मर गया। लाला जी पंडित के पास गए। पंडित ने कहा, ''तू अपने परिवार को लेकर गंगा पर जा फिर तेरे ऊपर कोई पाप नहीं रहेगा।'' लाला जी परिवार को लेकर गंगा पर गए। दान-पुण्य लेकर पंडितो ने इन्हें घर भेज दिया कि तेरा पाप उतर गया है।

जब इसका मिलाप मेरे साथ हुआ तो इसने मुझे अपनी हालत बताई। मुझे यह सब बताने का मतलब यही था कि मैं बहुत दानी हूँ चाहे बैल अचानक ही मरा था फिर भी मैंने गंगा पर जाकर दान-पुण्य किया। कबीर साहब कहते हैंः

साधु ऐसा चाहिए सच्ची कहे बनाए।
चाहे टूटे चाहे रहे बिन कहयां भ्रम न जाए।

साधु सच कहने से नहीं हिचकिचाता। साधु जानता है कि सच कहे बिना मेरे सेवक का भ्रम नहीं जाएगा। मैंने लाला जी से कहा अगर कोई हमें मारकर कहे कि मैं गंगा नहा लूं तो क्या पाप उतर जाएगा? जिसने पाप किया है उसे भुगतना ही पड़ेगा। मेरा इसको कहने का यही भाव था कि यह नाम जपे; नाम ही कर्म काट सकता है। कबीर साहब कहते हैंः

जद ही नाम हृदय धरयो भयो पाप का नाश।
मानो चिड़गी आग की पड़ी पुरानी घास।

चाहे लकड़ियों का कितना बड़ा ढ़ेर हो आग की एक चिंगारी उस लकड़ियों के ढ़ेर को राख कर देती है। चाहे हमारे कितने ही बुरे कर्म हों अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो सारे ही पाप राख हो जाते हैं।

विद्या का दान सबसे ऊँचा है लेकिन लोग जुबानी जमा खर्च करने को ही परमात्मा की भक्ति समझते हैं। परमात्मा से मिलना

चाहते हैं। ज्ञानी लोग बाल की खाल उतारने को ही भक्ति समझते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ज्ञानी गुर बिन भक्ति न होय।
हर हर करे नित कपट कमाए हृदय शुद्ध न होय।
ज्ञान ध्यान धुन जाणिए अकथ कहावे सोय।

जुबान से राम-राम कहने से आपका हृदय शुद्ध नहीं हो सकता। जो धुन सच्चखंड से उठकर माथे के पीछे धुनकारे दे रही है जब तक आप उसके साथ संपर्क नहीं करते तब तक आपको ज्ञान नहीं हो सकता। महात्मा पढ़ने-पढ़ाने को ज्ञान नहीं कहते। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

पढ़या शांत न आवे पूछो ज्ञानियां जाए।

पढ़ने-पढ़ाने से शान्ति-तृप्ति नहीं होती। आप ज्ञानियों, भाईयों से पूछें क्या उन्हें शान्ति है? आप सोचकर देखें! रावण चार वेदों का टीकाकार पंडित था। आज तक रावण के समान किसी ने भी वेदों का टीका नहीं किया। उसी रावण की हम हर साल उत्तरी भारत में नकल बनाकर जलाते हैं अगर पढ़ने-पढ़ाने से मुक्ति होती तो गुरु नानकदेव जी महाराज यह न लिखते:

नानक कागज लख मणा पढ़ पढ़ कीजे भाव।
मस्सू तोट न आवही लेखण पौंण चलाओ।
भी तेरी कीमत न पवे हौं के वड आखा नांव।

आप कहते हैं कि चाहे आप प्रेम-प्यार से लाखों मण कागज पढ़ लें इससे आप भक्त नहीं बन सकते, आपके मन को शान्ति नहीं आ सकती; आप **नाम की कीमत** नहीं पा सकते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तमत में एम.ए. पास को भी पाँच साल के बच्चे के समान बनना पड़ता है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप मन-बुद्धि से परमात्मा को नहीं पा सकते। मन-बुद्धि दोनों अज्ञानी हैं जहाँ ये दोनों खत्म हो जाते हैं वहाँ से रूहानियत की शुरुआत होती है।''

मैं बताया करता हूँ कि जो महात्मा अंदर जाते हैं वे बड़े-बड़े फिलास्फरों को बुद्धु से कम नहीं समझते। उन्हें पता है कि ये बेचारे बाहर ही जमा खर्च करने में लगे हुए हैं। परमात्मा ने दौलत तो इनके अंदर रखी हुई है लेकिन पढ़े-लिखे सोचते हैं कि हम परमात्मा के दरबार के चौंकीदार हैं। जो आत्मा प्यार के परों पर चढ़ जाती है वह परमात्मा से मिल लेती है। विद्या का दान सबसे ऊँचा है अगर हम यह सोचें! हम इससे जन्म-मरण काट लेंगे हमारी आत्मा परमात्मा तक पहुँच जाएगी तो यह बात गलत है।

एक पंडित कबीर साहब के घर किताबों का बैल लादकर गया। कबीर साहब घर में नहीं थे उनकी बेटी कमाली थी। उसने कमाली से पूछा, ''क्या कबीर साहब का घर यही है?'' कमाली ने कहा, ''क्या तू कबीर साहब को इंसान समझता है?''

कबीर का घर आसमान पे यहाँ सिलहली गैल।
पाँव न टिके पपील दा ते पंडित लादे बैल।

कबीर साहब कुलमालिक हैं। उनकी आत्मा परमात्मा से जुड़ी हुई है वह सच्चखंड में रहते हैं। तूने किताबों के बैल लाद रखे हैं इन्हें लेकर वहाँ कैसे जा सकता है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

वेद व्यापारी नानका लद्द न चले कोय।

महात्मा की बानी ठंडे दिल से पढ़ने पर पता लगता है कि महात्मा की बानी में नाम, सतसंग और सतगुरु की महिमा हैं; सन्त-महात्मा हमें **नाम की कीमत** बताते हैं। जब सन्त-महात्मा हमारे अंदर तड़प देखते हैं तो हमें नाम के साथ जोड़ देते हैं। हम

नाम को आँखों से देख नहीं सकते, कानों से सुन नहीं सकते और जुबान से बयान नहीं कर सकते। आप आगे चलकर बताएंगे कि नाम हमें कहाँ से मिलता है और **नाम की कीमत** क्या है? गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैः

कर्म धर्म कर मुक्त मंगाही मुक्त पदार्थ नाम ध्याही।

हम कर्म-धर्म करके सोचते हैं कि हमें मुक्ति मिल जाएगी। महात्मा कहते हैं कि आप मन से यह ख्याल निकल दें कि इन कर्मों को करने से आपको मुक्ति मिल जाएगी?

कोई मंदिर जा मूरत पूजे। कोई तीरथ कोई बर्त में जूझे।

आप कहते हैं, ''कोई परमात्मा की खोज मंदिर में करता है। हम खुद ही मूर्तियों को बनाकर उनके आगे माथे टेकते हैं अगर मूर्ति में कुछ होता तो वह मूर्ति बनाने वाले को खाती जिसने उसकी छाती पर पैर रखकर उसे बनाया था। वह मूर्ति किस तरह आपको मुक्ति दे सकती है?'' कबीर साहब कहते हैंः

ठाकुर पूजे मुल ले मन हठ तीर्थ जाए।
देखा देखी स्वँाग धर भूला भटका खाए।

लोग मूर्ति खरीदकर लाते हैं। क्या खरीदे हुए ठाकुर कभी उद्धार कर सकते हैं? गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

ठाकुर हमरा सदबोलंता सर्व जीआं को प्रभ दान देता।

आप कहते हैं कि हमारा ठाकुर तो बोलता है, सब जीवों को दान देता है; सबकी परवरिश करता है। हम मंदिरों मे मूर्ति की स्थापना करके उसके आगे मत्था टेकते हैं, उसको पूजना शुरु कर देते हैं। कोई जप-तप करता है कोई व्रत रखता है। हम व्रत इसलिए रखते हैं कि हमारी मुक्ति हो जाए। व्रत का महात्म इतना ही था

कि आप संयम से खाना खाएं। इतना खाना न खा लें कि आप बीमार हो जाएं! लोग यह कहते हैं कि खाने में ताकत होती है ऐसा नहीं; ताकत तो हमें विरासत में मिली हुई है।

आप घट रामायण पढ़कर देखें! उसमें लोमस ऋषि का संवाद है। लोमस ऋषि ने अपने पिता से पूछा, ''पिताजी! मुक्ति का क्या साधन है? पिता ने कहा, ''तू व्रत रख।'' उसने कहा कि मैंने हजारों साल एकादशी के व्रत रखे थे, मुझे मक्खी का जन्म मिला था। मैं अब डरता हूँ अगर मैंने फिर व्रत रखे तो मक्खी का जन्म भोगना पड़ेगा। फिर पिता ने कहा, ''तू गंगा में जाकर स्नान कर, गंगा स्नान करने से मुक्ति है।'' पिछले युगों में बहुत लम्बी आयु होती थी। उसने कहा, ''मैंने हजारों बार गंगा में स्नान किया मुझे अनेंको बार मगरमच्छ की योनि मिली और अनेकों मगरमच्छों ने मुझे खाया। अब मैं डरता हूँ अगर मैं फिर पानी में मुक्ति ढूंढने लगा और मैंने पानी से प्यार किया मेरा फिर वहां जन्म हो जाएगा मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी।'' आखिर उसके पिता ने कहा, ''तू पंडितों को दान दे, दान देने से तू मुक्त हो जाएगा।'' उसने कहा, ''मैंने हजारों साल गायों का दान किया मुझे बिच्छू की योनि मिली।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

खेत पछाणे बीजे दान।

आप जिसे दान देते हैं वह आपके दान से जो कर्म करेगा उसका फल आपको ही मिलेगा।

मैं एक बुजुर्ग नामधारी महात्मा की बात बताया करता हूँ। उसने एक पंडित को गाय दान की। उस पंडित ने उस दान से शराब पी माँस खाया। उस बजुर्ग को रोज मीट शराब का डकार आने लगा। इस वजह से उसने और भी बहुत दान-पुण्य किए। पंडितों से

पूछकर तीर्थों पर गया। इंसान जितना बाहर जाता है उतना ही ज्यादा लोगों से संपर्क होता है। उसने बहुत से लोगों को बताया कि मैंने नामधारियों के घर जन्म लिया है। मेरी जिंदगी बहुत पवित्र है। हम मीट शराब को अपने नजदीक भी नहीं आने देते लेकिन मैं जब खाना खाता हूँ तो मुझे मीट शराब का डकार आता है।

आखिर वह फिरता-फिरता महाराज सावन के पास आया उस समय उसकी उम्र 130 साल थी, वह काफी बुजुर्ग था। लंगर का खाना खाने के बाद उसका डकार आना हट गया। बातों-बातों में महाराज सावन ने कहा कि तूने कुछ दान किया होगा? उसे वह दिया हुआ दान याद आ गया। जब वह मुझसे मिला तो उसने बताया कि मेरा दिया हुआ दान मुझे इसी जिंदगी में मिला। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि आप अपने पैसे सोच समझकर खर्च करें।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''व्रत और दान-पुण्य करना बुरी बात नहीं है।'' महात्मा हमें अकृतघ्न नहीं बनाते लेकिन वे कहते हैं कि आप सोच-समझकर दान करें।

यह सब भूले भटका खावें। कोई न इनकी भूल मिटावें।

आप कहते हैं, ''सब लोग परमात्मा की तरफ से भूले हुए हैं। कभी कहीं भटक रहे हैं तो कभी कहीं भटक रहे हैं।''

मेरे पिछले गाँव में एक सोहना सिंह था। वह किसी चेले की बात में आ गया। उस चेले ने कहा कि मैं तेरे रूपये दोगुने कर देता हूँ। उस चेले ने सोहना सिंह के चार हजार रूपये खा लिए और कहा कि मुझसे ज्यादा तगड़े गंगानगर में कचहरी रोड पर हैं।

गंगानगर में कचहरी रोड पर आमतौर पर तोते वाले बैठे होते हैं जिन्होंने तोते सिखाए होते हैं, तोते पर्ची निकाल देते हैं,

पर्ची पर लिखा होता है तू सुखी रहेगा, तू दुखी रहेगा, तेरी मुरादें पूरी होंगी। पर्ची पढ़कर हम खुश हो जाते हैं।

कचहरी रोड पर बैठे लोगों ने कहा कि हम देवता प्रकट कर देते हैं। देवता प्रकट करने के लिए कलयुग में कोई सामग्री नहीं देता। सोहना सिंह ने कहा कि मैं सामग्री दूँगा। उन्होंने कहा कि सामग्री देने से तुझे सोने की चार ईंटे और बावन लाख रूपये मिल जाएंगे। हम लोग दस-पन्द्रह हजार खर्च करना आसान समझते हैं। उसने सारी जिंदगी में डेढ़ मुरब्बा जमीन बनाई थी, उस जमीन को उसने आसानी से बेच दिया।

उन दिनों मेरी सेहत अच्छी थी मैं खुद गंगानगर गेहूँ लेकर जाया करता था। मेरे आढ़ती के पास सोहना सिंह की भी आढ़त थी। आप बहरूपिये बनते हुए भी देखते हैं। उन्होंने सोहना सिंह को चार बाहें लगाकर तेज रोशनी में देवता दिखा दिया। देवता ने कहा, ''मैं भूखा हूँ कलयुग में कोई मेरी पूजा नहीं करता जो मुझे खुश करेगा उसे सोने की चार ईंटे और बावन लाख रूपये मिल जाएंगे।'' सोहना सिंह ने चुप करके रूपये तोते वालो को दे दिए।

महाजन ने सोहना सिंह को समझाया कि तू मुझे बता दे तूने रूपये किसे देने हैं? तोते वालों ने उसे एक छोटा सा मंत्र बता दिया कि तू अंदर बैठकर चालीस दिन तक इस मंत्र का जाप कर, इस बारे में किसी से कोई बात मत करना; घरवाली से कहना कि सुबह उठकर रोज घर के आगे झाड़ू लगाया करे। उसने घर आकर घरवाली को बताया कि चालिसवें दिन लक्ष्मी आएगी तू दरवाजा साफ रखा कर। बेचारी घरवाली रोज सफाई करे, शब्द बोले।

जिन लोगों ने यह देखा था उन्हें पता नहीं था कि यह जट्ट कहाँ का है? जिसने बहरूपिये का रूप धारण किया था वह कहाँ

का है? जिन्हें पैसे नहीं मिले थे वे हमारे गाँव में आए। वे हमारे गाँव में भिक्षा नहीं माँगे लेकिन जिस घर में जाएं वहाँ इस तरह बोले जैसे पंडित बोलते हैं। हमारे गांव में चर्चा हुई कि ये लोग भिक्षा नहीं लेते लेकिन दिलों की बात बताते हैं। वे सोहना सिंह के घर भी चले गए। घर के आगे सोहना सिंह की घरवाली झाड़ू लगा रही थी। उन पंडितों ने कहा, ''भक्ता मत्थे दियां फुट गईयां।''

सोचकर देखें! आपने बावन लाख की आशा लगाई हो और कोई आपके घर आकर यह कहे कि मत्थे दियां फुट गईयां तो दुख आएगा ना! वह औरत झाड़ू लेकर पंडित के पीछे पड़ गई।

मैं उस समय आर्युवेदिक करता था। सोहना सिंह ने मुझे नब्ज दिखाकर कहा कि मुझे दवाई दे। मैंने कहा, ''तेरा दिल हिला हुआ है।'' उसने कहा, ''मेरा दिल कैसे हिल गया?'' मैंने कहा यह तो मुझे नहीं पता। उसने मुझसे पाँच हजार रूपये माँगे कि मैंने पैंसठ हजार की जमीन खरीदी है मुझे साई के लिए पैसे दे दे। मैंने हँसकर कहा, ''मेरे पास तो पैंसठ पैसे भी नहीं मैं तुझे कहाँ से दूं।'' वह मुझसे कहने लगा कि मेरी सोने के मडगार्ड वाली कारें चलेंगी मैं तुझे उनमें नहीं बिठाऊंगा। मैंने कहा, ''मैं अपनी साईकिल पर ही चला जाया करूंगा तू मुझे मत बिठाना।''

सोहना सिंह उठकर बाहर उन पंडितों के पास गया। पंडितों को पता था कि यह जरूर हमारे पास आएगा। पंडितों ने उससे कहा, ''भक्ता! तेरे साथ ठग्गी हुई है। न कोई देवता है न देवी। न तुझे बावन लाख मिलें न सोने की ईंटे मिलें, तेरे पैसे गए।''

सोहना सिंह आढ़ती के पास आया। आढ़ती ने पुलिसवालों से बात की। पुलिसवालों ने कहा कि हम कोशिश करेंगे। मेरे कहने का भाव है कि हम लोग भ्रम में हैं अगर कोई हमें समझाए तो हम

समझने के लिए तैयार नहीं होते। हम अपने ख्यालों के देवता बनाकर पूजते रहते हैं, कोई देवी-देवता आपसे खुद नहीं माँगता।

मालवा के लोगों को मढ़ियां बनाने का बहुत शौंक है। जिसकी शादी न होती हो, जिसका कोई मर जाए, जिसके कोई बच्चा न हो तो वे उसकी मढ़ी बना लेते हैं फिर उस मढ़ी पर लस्सी डालते हैं।

हमारे गांव के कुछ आदमी शराब पीकर रात को एक मढ़ी को पीटते रहे। जिन लोगों ने वह मढ़ी बनाई थी सुबह होने पर उन्होंने पंचायत बुला ली। वे लोग मेरे पास आकर कहने लगे, ''बाबा जी! रात को हमने बहुत बड़ी गलती की। हमें आना तो तभी चाहिए था लेकिन अब हम उन लोगों से किस तरह छुटकारा पाएं।'' मैंने उनसे कहा कि आप लोग उनसे यह कहें कि हमारे घर में भी ईटें पड़ी हैं, हमने आपकी मढ़ी पर पचास जूते मारे हैं आप लोग सौ जूते मार लें। कौन इनका भ्रम मिटाए?

जब मैं बाबा बिशनदास जी के पास पहुँचा तो वहाँ कुछ औरते बैठी भ्रम की बातें कर रही थी। बाबा बिशनदास ने कहा, ''अगर तुम कहो कि गर्मी न आए, सर्दी न आए चाहे जितने मर्जी तावीज करवा लो गर्मी-सर्दी अपने समय पर जरूर आएगी; आपके कर्मों के दुःख-सुख जरूर आएंगे।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

खेत शरीर जो बीजया, अंत खलोया आए।
द्दा दोष न दीजे काहूं, दोष कर्मा आपणया।
जो मैं कीता सो मैं पाया दोष न दीजे अवर जना।

आप किसी को क्या दोष देते हैं? आपने जो बीजा है वही उगेगा, वह आपने ही खाना है। महात्मा कभी किसी को अंधविश्वास में नहीं डालते। बाबा बिशनदास जी भ्रम और वहम में से निकले हुए पूरे महात्मा थे।

क्या पंडित क्या भेख गृहस्ती। यह सब बसे काल की बस्ती।

अब आप कहते हैं, ''पंडित, भेख और गृहस्थी सब काल के खाज हैं। काल के देश में रह रहे हैं, काल की पूजा करते हैं; काल ने इन्हें चबा जाना है।''

चौरासी में बहुत भरमावें। नर्क स्वर्ग के धक्के खावें।

आप कहते हैं कि शरीयत को मानने वाले चौरासी को नहीं मानते, वे कहते हैं कि पुर्नजन्म है ही नहीं। कमाई वाले महात्मा जो अंदर जाते हैं, वे कहते हैंः

कई जन्म भए कीट पतंगा, कई जन्म गज मीन करंगा।
कई जन्म है भी बिरख जोयो, मिल जगदीश मिलन की वरिया।

कबीर साहब अपनी बानी में कहते हैंः

ऐसे घर हम बहुत बसाए, जब हम राम गर्भ होए आए।
अस्थावर जंगम कीट पतंगा, अनक जन्म कीन्हे बहुत रंगा।

जिन महात्माओं की आँखे खुली हैं वे बताते हैं कि हम अनेक बार नीची योनियों और अनेक बार ऊँची योनियों में गए। मौहम्मद साहब अपनी जीवनी में बताते हैं, ''मैं अनेको माँ-बाप के पेट से पैदा हुआ हूँ।'' शम्स तबरेज कहते हैं, ''मैं कई बार बाग में फल बनकर लगा और लोगों ने मुझे खाया।'' ईसा भी अपनी बानी में कहते हैं, ''मैं अनेक माता-पिता के पेट से पैदा हुआ लेकिन शरीयत के लोग इस बात को नहीं मानते।''

परमार्थ की चार मंजिलें - शरीयत, मारफत, तरीकत और हकीकत है। हर मजहब की शरीयत अंधी है इसमें रहन-सहन का तरीका ही बताया जाता है।

कल मैंने बताया था कि जीव नर्कों में दुःख भोगता है। काल ने सूक्ष्म देश में ऐसे मंडल बनाए हुए हैं जो लोग यहाँ अच्छे कर्म करते हैं उन्हें कुछ अरसा स्वर्ग में रखा जाता है। स्वर्ग में भी भोग योनियां हैं। वहाँ भी दुःख-सुख, मौत-पैदाईश, लड़ाई-झगड़ा है। जो देवता बन जाते हैं वे भी इंसानी जामें को लोचते हैं। हम सोचते हैं कि पता नहीं देवता कितने ऊँचे हैं? लेकिन महात्मा कहते हैंः

इस देही को सिमरे देव, सा देही भज हर की सेव।
भजो गोविंद भूल मत जाओ, मानस जन्म का ऐही लाहो।

इंसानी जामें का लाभ परमात्मा की भक्ति है। जीव कभी नर्क में जाता है तो कभी स्वर्ग में जाता है। चौरासी में कभी पक्षी, कभी पशु, कभी पेड़ बनकर अनेकों धक्के खाता है।

जो कोइ उन से कहे समझाई। उल्टी मानें करें लड़ाई।

अगर कोई महात्मा जीवों को समझाने के लिए संसार में आता है तो ये समझने की बजाय महात्माओं से लड़ते-झगड़ते हैं। आप महात्माओं का इतिहास पढ़कर देखें! गुरु नानकदेव जी का क्या कसूर था? लोगों ने आपको कुराहिया कहा कि आप अच्छा उपदेश नहीं करते। कसूर के इलाके में तो लोगों ने आपको अपने गांव में रात भी नहीं काटने दी आखिर आपने कोढ़ी की कुटिया में जाकर रात गुजारी।

गुरु अर्जुनदेव जी को गैर मनुखी तसीहे देकर शहीद किया गया। गुरु तेग बहादुर को उस समय की हुकूमत ने चाँदनी चौक दिल्ली में दुनिया के सामने शहीद किया। शम्स तबरेज की खाल उतरवा दी। मंसूर को सूली पर चढ़ा दिया। ईसा के सिर पर काँटो का ताज पहना दिया। इन महात्माओं का क्या कसूर था?

महात्मा हमें कहते हैं कि आप बहे जा रहे हैं, इंसानी जामें से फायदा उठाएं। आप अपने-अपने समाज और घरों में रहकर गृहस्थ की जिम्मेवारी निभाएं। आओ! हम आपको नाम के साथ जोड़ देते हैं और आपसे कुछ भी नहीं माँगते। महात्मा अपनी तालीम और **नाम की कीमत** नहीं लेते। कबीर साहब कहते हैं:

नाम रतन धन कोठड़ी, खान खुली घट माहे।
सेत मेत ही देत हूँ, ग्राहक कोई नाहे।

हीरे के ग्राहक बहुत कम होते हैं कोड़ियों के ग्राहक बहुत ज्यादा होते हैं अगर कोई उन्हें समझाता है तो वे उनके साथ लड़ते-झगड़ते हैं; अब कैसे फायदा हो?

कलजुग कर्म धर्म नहीं कोई। नाम बिना उद्धार न होई।

सतयुग, द्वापर, त्रेता और आज कलयुग है। वैसे तो हर युग में नाम से ही मुक्ति है लेकिन कलयुग का तो कानून यही है कि नाम बिना मुक्ति नहीं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

कलु आया कलु आया, इक नाम बोवो नाम बोवो।
आन ऋत नाहीं नाहीं, मत भ्रम भूलो भूलो।

आप भ्रम में न रहें। कलयुग में नाम ही निशानी है जिसे नाम मिल जाता है उसका बेड़ा पार है बाकी यहीं रहेंगे धक्के खाएंगे। महात्मा किसी एक मजहब या मुल्क के लिए बानी नहीं लिखते उनका उपदेश स्त्री-पुरुष सबके लिए समान है। कलयुग में नाम से ही मुक्ति है, इसमें कोई कर्म-धर्म, जप-तप कारगर नहीं है।

नाम भेद है अति कर झीना। बिन सतगुरु काहू नहिं चीन्हा।

नाम बहुत सूक्ष्म और बारीक चीज़ है। सन्त नाम को हमारे अंदर टिका देते हैं, यह समझने समझाने की बात नहीं तवज्जो

होती है। यह बड़ा सूक्ष्म मसला है। यह किसी किताब में नहीं लिखा जाता। हमारे धर्मग्रन्थ संस्कृत, उर्दू, पंजाबी या अरबी में लिखे हैं लेकिन नाम हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, अरबी किसी भी जुबान में नहीं लिखा हुआ। नाम बिना लिखा कानून बिना बोली भाषा है। गुरु अंगददेव जी महाराज उस **नाम की कीमत** बताते हैंः

अखां बाजों वेखना बिन कन्ना सुनना।
पैरां बाजों चलना बिन हत्थों करना।
जीभा बाजों बोलना एयों जीवित मरना।
नानक हुक्म पछाणके एयों खसमें मिलना।

ये आँखें फनाह को देखती हैं। जिन आँखों से हमने नाम को देखना है वे आँखें आपके अंदर हैं। बाहर की आँखे बंद करें अंदर की आँखे खुल जाएंगी वे प्रकाश और नाम को देखेगी। इस तरह बाहर के कान बंद करेंगे तो अंदर शब्द, राग और गुरबानी को सुनने लग जाएंगे। वह बानी दिन-रात हमारे अंदर हो रही है। इसी तरह ये पैर यहीं रह जाएंगे वे पैर ओर हैं जिनसे हमने रूहानी चढ़ाई चढ़नी है।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि यह एक सूक्ष्म मसला है। सन्त-सतगुरु नाम के भंडारी बनकर आते हैं, वे आकर नाम देते हैं और नाम ही जपवाते हैं। हम उन पर बलिहार जाते हैं जिन्होंने कलयुग में नाम प्राप्त किया है।

परमात्मा ने कलयुग में नाम गुप्त रखा हुआ है। सन्त उस नाम को बताने के लिए ही संसार में आते हैं। सन्त-महात्मा न किसी की पहले बनी कौम तोड़ने के लिए आते हैं और न ही कोई नई कौम बनाने के लिए आते हैं। न किसी खास किस्म के कपड़े पहनने के लिए कहते हैं। सन्त कहते हैं कि अपने-अपने समाजों में

रहें। आओ! आपको 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ दें। सुबह उठकर दो-तीन घंटे लगाएं और अपने घर पहुँच जाएं।

जपने में सब गये भुलाई। नाम अगम कोइ भेद न पाई।

सब लोग जपने में ही भूल जाते हैं। जप वह है जो हमें बार-बार करना है। मैं बताया करता हूँ कि मैं आर्मी में रहा या घर में रहा, मैं सुबह डेढ़-दो बजे उठता था। मेरा आठ घंटे का जप होता था। किसी ने मुझे बताया कि जप करते समय आटे की गोलियां बनाएं फिर उन गोलियों को पानी में डाल दें मछलियां खाएंगी आपको पुण्य लगेगा। मैंने यह काम भी किया लेकिन मन को शान्ति नहीं आई।

जब बाबा बिशनदास के पास गए तो उन्होंने कहा, ''तू रोज जप करता है मछलियों को गोलियां खिलाता है, क्या कभी शान्ति आई, अंदर कभी नूर, प्रकाश या चिंगारी देखी?'' वहाँ खामोश होकर सिर नीचे कर दिया।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सारी दुनिया अपने-अपने धर्मग्रन्थों के लफ्जों को जपने का दावा करती है। हिन्दुओं के घर पैदा होते हैं गीता पढ़ते हुए उम्र खत्म हो जाती है लेकिन जो गीता कहती है वह नहीं करते। सिक्खों के घर पैदा होते हैं जपजी साहब पढ़कर सारी उम्र निकाल देते हैं लेकिन जो जपजी साहब कहता है हम वह करने के लिए तैयार नहीं। जपजी साहब में आता है।''

भरिए हत्थ पैर तन देह, पानी धोत्यां उतरस खे।
मूत पलीती कप्पड़ होय, देह सबून लईए ओह धोए।
भरिए मत पापां के संग, ओह धोवे नामे के रंग।

जपजी साहब में 'नाम' की बेअंत महिमा आती है। जपजी साहब की एक-एक तुक में नाम की महिमा है। जपजी साहब की चार पोढ़ियों में नाम की तारीफ की गई है। आप अंदर जाकर उस 'नाम' को सुनें आपके सारे पाप कट जाएंगे लेकिन हम पढ़ने में ही मुक्ति समझते हैं।

जो सतगुरु पूरे मिल जाते। तो वे भेद नाम का गाते।

आप कहते हैं, ''जब बारिश होनी होती है आसमान में बादल छा जाते हैं। जब परमात्मा मेहर करता है हमें संगत में ले आता है, पूरे महात्मा के पास ले आता है और पूरे महात्मा उस ऊँचे सच्चे नाम का भेद बताते हैं। नाम दो किस्म का है एक वर्णात्मक और दूसरा धुनात्मक। वर्णात्मक नाम उसे कहते हैं जो लिखा पढ़ा और बोला जाए; यह भी चार तरह का है - परा, बसन्ती, मध्मा और बेकरी। धुनात्मक नाम लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता, महात्मा उस नाम की महिमा गाते हैं।''

नाम रहे चौथे पद माहीं। यह ढूँढें तिरलोकी माहीं।

यह त्रिलोकी काल के आधीन है। नाम चौथे पद में है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

खंड पाताल द्वीप सब लोआ, काले वस आप प्रभ कीआ।
त्रिहां गुणां ते रहे निरारा, सो गुरमुख शोभा पाऐंदा।

खंड, पाताल और द्वीप की रचना करके काल के सुपुर्द कर दी है। जब इस दुनिया में नाम नहीं है तो हमें नाम कहाँ से मिल जाएगा, नाम तो सच्चखंड में बैठा है। सन्त-सतगुरु जीव को उस नाम के पास ले जाकर खड़ा कर देते हैं कि हे परमात्मा! यह तेरा बच्चा है गलती बख्शवाने के लिए आया है आगे भूल नहीं करेगा।

मैं कहा करता हूँ कि नाम सतगुरु ने पैदा किया है जो लोग सतगुरु को पकड़ लेते हैं वे नाम को भी पकड़ लेते हैं।

तीन लोक में नाम न पावे। चौथे लोक में संत बतावें।

त्रिलोकी में नाम नहीं। नाम सच्चखंड चौथे पद में रहता है।

तीन लोक में बसता काल। चौथे में रहें नाम दयाल।
सोई नाम संतन से पावे। बिना संत नहिं नाम समावे।

आप कहते हैं, ''काल त्रिलोकी में रहता है, नाम चौथे लोक में है। सन्त वही नाम देने के लिए आते हैं। सन्त ग्रन्थों-पोथियों में से नाम नहीं देते।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर नाम ग्रन्थ-पोथियों में होता तो पांच साल की लड़की भी यह नाम बता सकती है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज लिखते हैं:

सिमृत वेद पुराण पुकारण पोथियाँ नाम बिना सब कूड़ गाली होछियां।

सत्ताईस स्मृतियां, अठारह पुराण, खटशास्त्र हैं। ये पोथियां नाम को पुकारती है। नाम के बिना आप जो भी कर्म करते हैं वह सब कूड़ निकृष्ट और नाश होने वाला है; सत चीज नाम है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जननी जने ते भक्तजन या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बांझ रहे काहे गंवावे नूर।

जिसके हृदय में नाम ही नहीं बसा वह माता बाँझ क्यों नहीं बैठी रही, उसने अपना नूर और सेहत क्यों खराब की! माता जन्म दे तो भक्त बेटे को ही जन्म दें। महात्मा हमें इससे ज्यादा क्या समझा सकते हैं?

अब मारग का भेद बताऊँ। आँख खुले तो भेद लखाऊँ।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि अब मैं आपको अंदर जाने के रास्ते का भेद बताता हूँ। सन्त-महात्मा हमें परमार्थ का आसान से आसान रास्ता बताते हैं जिस पर पूरे निशान हों ताकि हमें पता लग सके कि हमने कहाँ जाना है, हम कहाँ पहुँच गए हैं गुरु कहाँ मिलेगा और नाम कब मिलेगा? अगर आप जीते जी देखना चाहते हैं तो मेहनत करें आँखें खोलें आपको जीते जी समझ आ जाएगा। महात्मा अंधविश्वास नहीं देते वे कहते हैं आओ! करो! और देखो।

पहिले सुर्ती नैन जमावे। घेर फेर घट भीतर लावे।

जब सन्त-सतगुरु हमें नाम देते हैं तब अच्छी तरह समझा देते हैं कि किस तरह हमारा मन शरीर में से निकलकर बाहर दुनिया से संबध बनाए बैठा है। हमारा मन माता-पिता, बहन-भाई, कौम-मजहब में फैल चुका है; यह ख्याल सिमरन के जरिए फैला है।

सन्त-सतगुरु हमें सिमरन देकर कहते हैं कि जब आप बार-बार सिमरन को दोहराएंगे तो आपका फैला हुआ ख्याल वापिस तीसरे तिल पर आ जाएगा। जब ख्याल नीचे गिरता है तो इसे इकट्ठा करने के लिए ध्यान की जरूरत पड़ती है। जिस सतगुरु ने हमें नाम दिया होता है उसका स्वरूप अपने आप ही टिकना शुरू हो जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी बानी में लिखते हैं:

अकालमूर्त है साध संतन की ठहर ने की ध्यान को।

सन्त आपको जो मंत्र बताते हैं आप उसे बार-बार याद करें। उनकी मूरत से मतलब स्वरूप से है। ऐसा नहीं कि आप रोज उनकी तसवीर को माथे टेकते रहें। तसवीर रखनी है तो बड़ा भाई, बुजुर्ग समझकर रखें। तसवीर का मतलब यह नहीं कि हमने तसवीर

का ध्यान करके बैठ जाना है, ध्यान के लिए तो सतगुरु का स्वरूप होता है। सन्त काल के दायरे से ऊपर होते हैं उनके स्वरूप का ध्यान अपने आप आ जाता है। सिमरन के जरिए अपने ख्याल को आँखों के पीछे तीसरे तिल पर एकाग्र करें। गुरु नानक कहते हैंः

गुरु की मूरत मन में ध्यान, गुरु का शब्द मंत्र मन मान।

विरह होय तो यह बन आवे। मेहनत करे तो कुछ फल पावे।

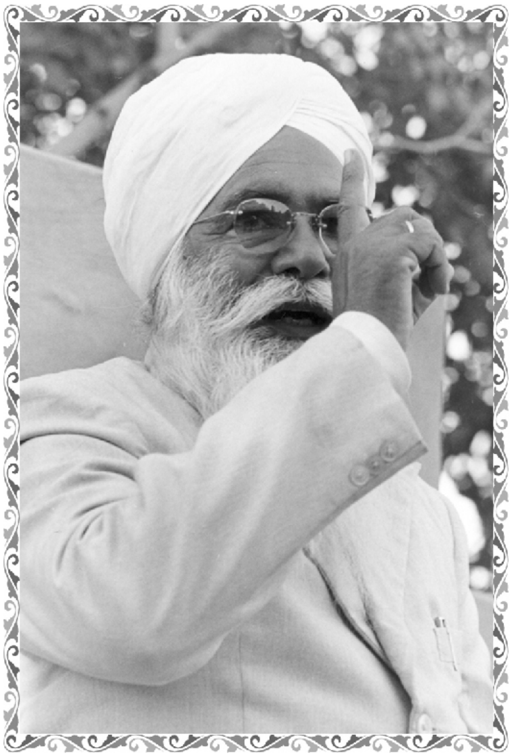

सबसे पहले हमारे अंदर विरह और तड़प होनी चाहिए। जिसे भूख लगी है वह खाना इज्जत से खाएगा अगर भूख नहीं तो बहुत से नखरे करेगा कि यह खाना ठीक नहीं इसमें नमक कम है, यह ठंडा है। चाहे उसे जलेबियां भी मिलें तो उसमें नुख्स निकालेगा अगर भूख लगी हो तो दस दिन का बासा खाना भी खा लेता है; भूख स्वाद नहीं देखती।

नाम लेकर कामयाब होने के लिए विरह और तड़प की जरूरत पड़ती है अगर हमारे अंदर विरह है लेकिन हम मेहनत नहीं करते तो हम कामयाब नहीं हो सकते। जो मेहनत नहीं करते वे कहते हैं कि मन नहीं टिकता, गोडे-गिटटे दुखते हैं, नींद आ जाती है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहे।
आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम बहे।
काम क्रोध के धक्के खावे लोभ नदी में डूब मरे।

भजन के चोर आलसी हो जाते हैं। काम, क्रोध के धक्के खाते हैं। अभ्यास करने वालों को कोई शिकायत नहीं होती।

देखे तिल तिल जोत समावे। अनहद सुन मन बस में आवे।

जब यह तीसरे तिल पर एकाग्र होकर नूर प्रकाश देखेगा, तब सच्चखंड से उठ रहा शब्द इसके अंदर धुनकारे देने लग जाएगा। गुरु नानकदेव जी ने भी जिक्र किया हैः

अंतर जोत निरंतर बानी।

हम सबके अंदर वह जोत जल रही है, बानी आ रही है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सिर्फ लफ्जों का फर्क है किसी महात्मा ने किसी तरह तो किसी ने किसी तरह समझा दिया।

मन बस होय तो सुरत जागे। निरख अकाश आत्मा पागे।

अभी हमारा मन बस में नहीं है, मन इन्द्रियों के बस में है और इन्द्रियां भोगों के बस में है। अभी आत्मा अपने घर की तरफ से सोई हुई है, दुनिया की तरफ से जाग रही है लेकिन जब मन बस में आ जाता है तो आत्मा जाग जाती है। तब अंदर जाकर आँखों से देख लेती है कि मेरा कौन सा देश है, कौन सा घर है और मैं किसकी अंश हूँ?

शब्द पकड़ परमातम निरखे। आतम जाय परमातम परखे।

आप कहते हैं कि आत्मा सँहसदल कँवल पर चली जाती है फिर आगे ब्रह्म में चली जाती है और शब्द को पकड़कर दूसरी

मंजिल को पार कर लेती है। सन्त-महात्मा आत्मपद सँहस दल कँवल को और परमातम पद त्रिकुटी ब्रह्म को कहते हैं।

परमातम से आगे जाई। सुन्न महल में बैठक पाई।

जब हम स्थूल दुनिया में है तब स्थूल पर्दा, स्थूल माया है। जब हम सूक्ष्म देश में जाते हैं वहाँ सूक्ष्म पर्दा, सूक्ष्म माया है। जब हम कारण देश में जाते हैं वहाँ कारण पर्दा, कारण माया है लेकिन जब हम पारब्रह्म के शिखर में पहुँच जाते हैं तब ये तीनों पर्दे उतर जाते हैं वहाँ माया का नामोंनिशान नहीं। तब इस आत्मा को पता लगता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है यह फिर आगे जाती है।

सुन्न के परे महासुन्न लेखा। महासुन्न पर खिड़की देखा।

आप कहते हैं कि महासुन्न अंधेरे का देश है। जब आत्मा पारब्रह्म से महासुन्न के देश में आती है तो इसे अपने आप पार नहीं कर सकती। हांलाकि जब आत्मा पारब्रह्म दसवें द्वार में पहुँचती है तब उसका नूर बारह सूरज का हो जाता है फिर भी यह अंधेरे के देश महासुन्न को पार नहीं कर सकती। हिन्दू शास्त्र कहते हैं कि गुरु वह है जो अंधेरे में प्रकाश कर दे। गुरु नानक कहते हैं:

जे सौ चंदा उगवे सूरज चढ़े हजार।
ऐते चानण होंदया गुरु बिन घोर अंधार।

वहाँ पहुँचकर गुरु की जरूरत पड़ती है। गुरु आत्मा को अपने प्रकाश के साथ आगे ले जाता है। आगे वह मैदान आता है जहाँ खिड़की है भँवरगुफा का देश इसके सामने होता है तब आत्मा कहती है जो तू है, वह मैं हूँ।

खिड़की आगे चौक अपारा। चौक परे निरखा सत द्वारा।

भँवरगुफा सच्चखंड का दरवाजा है, वह बहुत सुहावना देश है। वहाँ पहुँचकर ही पता लगता है कि सच्चखंड और सतनाम क्या है? अगर कोई यहाँ बैठकर सच्चखंड सतनाम करता रहे तो वह न सच्चखंड पहुँच सकता है और न सतनाम ही को मिल सकता है।

अगर हम यहाँ बैठकर आग-आग करते रहें तो सेक नहीं आएगा आग के पास जाना पड़ेगा अगर यहाँ बैठकर बर्फ-बर्फ करते रहे तो ठंडक महसूस नहीं होगी बर्फ के पास जाना पड़ेगा। हम प्यार से सच्चखंड सतनाम कहते हैं हमने जाकर उस सच्चखंड सतनाम से मिलना है।

सत्तपुरुष सतनाम कहाई। सत्तलोक निज पाया आई।

स्वामी जी महाराज ने उसे सतद्वारा कहकर बयान किया है। वह सतपुरुष है सतनाम भी वही कहलाता है। शुरू में वहीं से आत्मा का निकास हुआ। वही हमारी आत्मा का देश है। आत्मा सतनाम की अंश है। यहाँ आकर इसने दुनिया की कौम, जाति का लिहाज किया लेकिन अपनी कौम, अपने घर को भूल गई। दुनिया के घरों की रखवाली करने लग गई। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो घर छड गवाँवणा सो लग्गा मन माहे।
जित्थे जाए वुध वरतणा तिसकी चिन्ता नाहे।

हमने जो घर छोड़ जाने हैं हमें उनकी चिन्ता लगी हुई है। जहाँ जाकर सदा रहना है उसे विसार दिया है।

यह मारग संतन ने भाखा। भेद प्रगट कुछ गोय न राखा।

सन्तों ने आकर यह भेद दिया कि हम सबका परमात्मा एक है, वह सबके अंदर बैठा है। जिसे मिलेगा अंदर से ही मिलेगा।

अगर हम गुरु नानकदेव जी की बाणी पर विचार न करें तो इसमें गुरु नानकदेव जी का कसूर नहीं। वेदों-शास्त्रों को न विचारें तो वेदो-शास्त्रों का कसूर नहीं, हमारा कसूर है। सब सन्तों ने नाम को, परमात्मा को छिपाकर नहीं रखा। उन्होंने प्रकट करने के बाद पुकारकर कहा कि सन्तों के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं, **नाम की कीमत** समझें।

लोक वेद बस जो जिव होई। सो परतीत न लावे कोई।।

सन्त वेदों की निन्दा नहीं करते। वेद दूसरी मंजिल तक बयान करते हैं, ॐ दूसरे मंडल की धुन है। सन्त पांचवी मंजिल सच्चखंड को बयान करते हैं। दूसरी मंजिल वाले को पाँचवी मंजिल के बारे में क्या पता है? सन्तों को नीचे के मंडलों का पता है क्योंकि वे निचले मंडलों से आते-जाते हैं। हमें पता है रुपया सौ पैसे का है पौंड-डॉलर इससे महंगे होते हैं।

कृष्ण भगवान ने गीता में अर्जुन से कहा, ''हे अर्जुन! वेद तीन गुणों को ही बयान करते हैं इन्हें इससे आगे का पता नहीं। तू नेकी बदी से ऊपर आ जा और नासिका के अग्र भाग में अपने ध्यान को जमा फिर तुझे पता लगेगा कि रोशनी कहाँ से आती है।'' सब महात्मा अंदर जाने का उपदेश करते हैं लेकिन हम उनकी तालीम को भूलकर बाहर रीति-रिवाज बनाकर बैठ गए हैं।

जो लोग वेद पढ़ने में मुक्ति समझते हैं उन लोगों को चाहे जितना समझा लें वे प्रतीत नहीं लाते कहते हैं कि सन्त खंडन करते हैं। सन्त खंडन नहीं करते बल्कि वेदों की असली कीमत बताते हैं। गोरख और मछंदर को नाम नहीं मिला था वे ऊपर नहीं गए थे। आप उनकी बानी पढ़कर देखें! वे ॐ तक ही बयान करते हैं।

लोक वेद में जो पढ़े, नाग पाँच डस खाए।
जन्म-मरण दुख में रहें, रोवे और चिल्लाए।

पढ़ने-पढ़ाने वालों की यह हालत है कि उनका काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कुछ भी नहीं घटता। उन्हें ये पाँचों नाग लिपटे हुए है ये रोज उनके डंक सहते हुए रोते-चिल्लाते हैं फिर भी बचने का उपाय नहीं करते। ऐसे लोग किसका भाग्य लाएं!

जिन सतगुरु के वचन की करी नहीं परतीत।
नेह संगत करी सन्त की वे रोवें सिर पीट।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जिन्होंने सतगुरु के वचन पर भरोसा नहीं किया कि सन्त क्या उपदेश करते हैं और हमें क्या देना चाहते हैं? उन्होंने कभी अपना ख्याल साध-संगत में नहीं जोड़ा आखिरी वक्त जब यम गला दबाता है तब सिर पकड़कर रोते हैं; फिर क्या बनता है?''

स्वामी जी महाराज ने हमें बड़े प्यार से समझाया कि इंसानी जामें में आकर हमें 'शब्द-नाम' की कमाई करनी चाहिए। जप-तप करने से और मूर्ति पूजा से परमात्मा नहीं मिलता मुक्ति नहीं मिलती। हम बाहर जो कुछ कर रहे हैं यह इस तरह है कि हम पानी को बिलो रहे हैं। आप कहते हैंः

पानी मथ्थे हाथ कुछ नाही, खीर मथ्थन आलस भारा।

हम बाहर जो भी रीति-रिवाज करते हैं वह पानी में मधानी डालने जैसा है। सन्त-महात्मा हमारे ख्याल को बाहर से हटाकर उस दूध की तरफ लगाते हैं। वे 'सुरत-शब्द' के अभ्यास पर जोर देते हैं। हमें भी चाहिए स्वामी जी के कहे मुताबिक **नाम की कीमत** समझें, अपने जीवन को सफल बनाए। ***

धन्य अजायब

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से दिल्ली में 17, 18 व 19 मई 2013 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार,
(नज़दीक पीरा गढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087
फोन - 98 18 20 19 99 व 98 10 21 21 38

भजन-सिमरन और सतसंगो के कार्यक्रम की अधिक जानकारी के लिए www.ajaibbani.org पर अपना नाम रजिस्ट्र करें।

मासिक पत्रिका **अजायब बानी** से संबधित पत्र व्यवहार के लिए कृप्या सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस., रायसिंह नगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) पर संपर्क करें।